IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''ग्रामीण विकास के सैद्धान्तिक तथा स्थानिक संगठन प्रतिरूप जनपद जौनपुर के शाहगंज तहसील का भौगोलिक अध्ययन''

शोध निर्देशक

डॉ0 विन्ध्याचल सिंह यादव

अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर–भूगोल विभाग

समता स्नात्कोत्तर महाविद्यालय

सादात, गाजीपुर

शोधार्थी

प्रह्लाद यादव

एम0ए0भूगोल,यूजीसी, नेट

समता स्नात्कोत्तर महाविद्यालय

सादात, गाजीपुर

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र शाहगंज तहसील जौनपुर उ0 प्र0 के सन्दर्भ में ग्रामीण विकास के सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि तथा स्थानिक संगठन का भौगोलिक अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत ग्रामीण विका की संकल्पना, पंचवर्षीय योजनाओं एवं ग्रामीण विकास प्रदेश स्तरीय समूह लक्षित योजनाओ, भौगोलिक रूपरेखा, सामाजिक संरचना, आर्थिक संरचना तथा यातायात अभिगम्यता के बिन्दुओं द्वारा अध्ययन क्षेत्र का विश्लेषण किया गया है। ग्रामीण विकास एक बहुआयामी प्रकिया है जो परम्परागत आर्थिक, सामाजिक संगठनों के द्वारा विकास किया गया है। भारत जैसे विकासशील देश में विकास का आधार ग्रामीण विकास पर निभर है। ग्रामीण विकास हेतु कृषि और औद्योगिक विकास पर ही सम्भव है। वर्तमान समय में ग्रामीण विकास के मूल उद्देश्य , भोजन, आवास, वस्त्र, व्यवसाय, शिक्षा एवं स्वरोजगार को विकसित करके उत्पादन मे वृद्धि की जा सकती है। इस प्रकार ग्रामीण विकास हेतु कृषि औद्योगिक, स्वास्थ्य शिक्षा, निर्धनता उन्मूलन एवं रोंजगार के अवसरों को वृद्धि करके ग्रामीण क्षेत्रों में समन्वित किया जा सकता है। जिसके फलस्वरूप सामाजिक, आर्थिक उन्नति हेतु ग्रामीण विकास ही महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। शोधार्थी जनपद जौनपुर के शांहगंज तहसील में ग्रामीण विकास हेतु ग्राम पंचायत की जनसंख्या एवं आर्थिक हेतु समन्वित विकास हंतु सरकार की योजनाओं से लक्ष्य तक पहुॅचा जा सकता है।''

प्रस्तावना :–

विकास एक बहुआयामी प्रकिया है, जो परम्परागत सामाजिक, आर्थिक संगठनों के पुनर्गठन द्वारा पूर्ण होती है। इस विष में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। विकास सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से बिना किसी वर्ग को अलग किये या बिना किसी भेदभाव के सभी को न्याय पूर्वक समान रूप से उपलब्ध होती है। कृषि, उद्योग, बैंकिंग, स्वास्थ्य, शिक्षा, जनसंख्या, परिवहन एवं संचार के साधन आदि मुख्य आधार हैं, जिनके द्वारा ग्रामीण विकास के स्तर का निर्धारण होता है।

अध्ययन क्षेत्र :–

अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण भूभाग समतल है। मैदान की धरातलीय संरचना खादर वं बांगर मैदान जो गोमती, सई, मंगई नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से निर्मित है। जो उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्व में स्थित जिला जौनपुर के अन्तर्गत उत्तर में स्थित शाहगंज तहसील (26^0 –26^0 23′ उत्तरी अक्षांश तथा 82^0 23′ – 82^0 43′ पूर्वी देशान्तर) है।

शोध बिन्दु :–

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य आधार प्राथमिक व द्वितीयक ऑकड़े हैं। ऑकड़ों के एकत्रीकरण के लिये–

1. पुस्तकालय अध्ययन
2. क्षेत्र विशेषज्ञों से सम्पर्क करके वहॉ की समस्याओं व उन्हें दूर करने के लिये उपायों को जानने का प्रयास किया।
3. प्राथमिक ऑकड़ों के संग्रह का मूलाधार क्षेत्र सर्वेक्षण है, जिसमें साक्षात्कार विधि द्वारा प्रत्येक विकास खण्ड के आकार के गांवों को चुनना।
4. द्वितीयक आंकड़े सरकारी पत्र–पत्रिकाओं व ग्रामीण स्तर पर आंकड़ों के लिए जनगणना विभाग लखनऊ से मदद लिया गया।
5. मात्रात्मक विश्लेषण विधियों का प्रयोग।
6. मानचित्र व आरेखों द्वारा आंकड़ों का संग्रह।

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत ग्रामीण विकास की संकल्पना :–

अध्ययन क्षेत्र उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की शहगंज तहसील (23^0–26^0 23′ उ0 अक्षांश तथा 82^0 23′ –82^0 43′ पूर्वी देशांतर) है जो तीन विकास खण्डों में विभक्त है। (चित्र सं0 1) इस तहसील में विभिन्न आकार वाले कुल 543 ग्राम हैं तथा दो कस्बे हैं। यहॉ की कुल जनसंख्या 761994 हैं जिसमें नगरीय जनसंख्या 45.994 है। यह मूलतया ग्रामीण भूदृश्य वाला क्षेत्र है।

चित्र संख्या 1

इसके उत्तरी पश्चिमी सीमा पर सुल्तानपुर जनपद, पूर्वी सीमा पर आजमगढ़ जनपद, द0 पश्चिमी सीमा पर जौनपुर सदर तहसील तथा पश्चिमी सीमा पर बदलापुर तहसील है। यह तीन विकासखण्डों में विभक्त है। इस तहसील में विविध आकार वाले कुल 543 ग्राम है। जिसे प्रशासनिक दृष्टि से तीनों विकासखण्डों को 40 न्यायपंचायत क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। जिसमें कुल जनसंख्या 761994 है। जिसमें नगरीय जनसंख्या 45,994 है। यह मूलतया ग्रामीण भूदृश्य वाला कृषि प्रधान क्षेत्र है, जिसका कुल क्षेत्रफल 706.63 वर्ग किमी0 है तथा जनसंख्या घनत्व 1081 व्यक्ति/वर्ग किमी0 है। जनसंख्या वृद्धि दर वार्षिक 2.05 प्रति0 है ।

व्यावसायिक संरचना (2011) :–

कुल कर्मकार 230181 है, जिसमें महिला जनसंख्या 75842 भी शामिल है। मानव विकास स्तर के क्षेत्रीय वितरण को तालिका 1.1 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 1.1

शाहगंज तहसील : मानव विकास सूचकांक 2017–18

क0 सं0	न्याय पंचायत	स्वास्थ्य सूचकांक	शिक्षा सूचकांक	आय सूचकांक	मानव विकास सूचकांक
1	डीह अशर्फाबाद	0.58	0.479	0.624	0.567
2	मयारी	0.590	0.450	0.583	0.541
3	सयायन	0.525	0.380	0.580	0.495
4	अरसियॉ	0.550	0.380	0.610	0.513
5	गैरवाह	0.580	0.430	0.593	0.534
6	जमदरा	0.490	0.550	0.610	0.550
7	बुमकहॉ	0.540	0.370	0.548	0.487
8	सुइथाकलॉ	0.560	0.460	0.560	0.526
9	समोधपुर	0.595	0.410	0.600	0.535
10	शाहमॉऊ	0.570	0.380	0.628	0.526
11	डेहरी	0.565	0.390	0.585	0.531
12	मोहिउद्दीनपुर	0.490	0.370	0.524	0.461
13	कोपा	0.600	0.430	0.595	0.542
14	ताखापुरवा	0.685	0.450	0.600	0.578
15	बडागांव	0.590	0.480	0.571	0.547
16	भादी	0.620	0.580	0.591	0.597
17	सबरहद	0.540	0.590	0.580	0.570
18	पाराकमाल	0.490	0.580	0.580	0.550
19	रानीमऊॅ	0.610	0.550	0.480	0.547
20	खेतासराय	0.680	0.580	0.540	0.600
21	रूधौली	0.540	0.470	0.550	0.520
22	जमदहों	0.560	0.480	0.540	0.527
23	बरंगी	0.480	0.550	0.570	0.527
24	मानीकलॉ	0.490	0.610	0.570	0.556

25	बड़उर	0.520	0.730	0.580	0.490
26	कुहियॉ	0.550	0.670	0.580	0.600
27	मेहरावॉ	0.570	0.580	0.550	0.560
28	खलीलपुर	0.580	0.570	0.560	0.570
29	पट्टी नरेन्द्रपुर	0.610	0.480	0.630	0.537
30	तिसौली	0.630	0.580	0.620	0.610
31	निजमापुर	0.580	0.530	0.590	0.566
32	सौरइयॉ	0.590	0.540	0.590	0.573
33	पटइला	0.575	0.530	0.600	0570
34	डिहियॉ	0.640	0.610	0.610	0.620
35	खुटहन	0.590	0.580	0.610	0.590
36	भागलपुर	0.600	0.480	0.610	0.563
37	टिकरीखुर्द	0.580	0.570	0.570	0.573
38	मरहट	0.540	0.480	0.570	0.530
39	मुबारकपुर	0.480	0.490	0.580	0.510
40	छतौरा	0.590	0.420	0.580	0.530

स्रोत :– सांख्यिकीय पत्रिका विकास खण्ड सुइथाकलॉ, शाहगंज (सोधी), खुटहन

इसके अन्तर्गत कृषि विकास, ग्रामीण गृह विकास, ग्रामीण स्वच्छता विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार, सामाजिक–आर्थिक ढॉचों में परिवर्तन आदि बाते ग्रामीण विकास में सहायक होती हैं।

'' ग्रामीण विकास अपेक्षाकृत अधिक सन्तुलित, विस्तृत एवं सर्वांगीण विकास का एक उपागम है, जिसके माध्यम से भौगोलिक, संस्थागत, आर्थिक एवं सामाजिक समन्वय स्थापित करके ग्रामीणों क जीवन स्तर में सुधार एवं उनके विकास के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है।'' (उमा लेले 1974)[5]

'' राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में अपना मत दिया है कि ग्रामीण विकास से तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कर रहे लोगों को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक स्तर से उठाकर ग्रामीण लोगों को स्वावलम्बी बनाना है।''

भारत में ग्रामीण विकास की रूपरेखा :–

भारत में ग्रामीण विकास की रूपरेखा सन् 1920 में रवीन्द्रनाथ द्वारा पश्चिम बंगाल राज्य में शक्तिनिकेतन के अनुभव के आधार पर प्रारम्भ किया। इसक पश्चात् स्पेन्सर हैच महोदय ने 1928 ई0 में मराठवाड़ा में 40 ग्रामों का विकास कार्यकम प्रारम्भ किया गया। महात्मा गॉधी द्वारा अनुमोदत ग्राम विकास योजना 1931 में उत्तर प्रदेश, बिहार, मद्रास सरकार द्वारा ग्रामीण विकास योजनाओं को आधारशिला प्रदान की गयी है।

गामीण विकास के लिए स्वतन्त्रता के बाद समयबद्ध कार्यकम के द्वारा 12 अक्टूबर 1952 को सामुदायिक कार्यकम को सम्पूर्ण राष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में लागू किया गया है । ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु यातायात, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, विपणन, सामाजिक–आर्थिक सेवाओं के विस्तार हेतु लक्ष्य रखा गया है। सन् 1960 ई0 में भारत सरकार के द्वारा कृषि

विकास कार्यकम के अन्तर्गत प्रारम्भ में जनपदीय गहन कृषि कार्यकम चुने हुए जनपदों में लागू किये गये। इसके बाद गहन कृषि क्षेत्र कार्यकम (IAAP) को लागू किया गया है। इस प्रकार आर0एल0 सिंह (1985) के अनुसार –'' ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्र का उसके सांस्कृतिक, वैश्विक के परिप्रेक्ष्य में समन्वित विकास से है, इसके पश्चात् विकास का केन्द्र मानव है, जिसके द्वारा व्यक्ति समुदाय के मध्य लाभकारी सन्तुलन स्थापित करके नियोजन प्रकिया को निचले स्तर तक ले जाया जाये, जिससे योजना निर्माण तथा कियान्वयन में सामन्जस्यों की सहभागिता को सुनिश्चित की जा सके।'' [7]

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण विकास की परियोजनायें :–

ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास हेतु सरकार के द्वार बनायी गयी नीतियों या कार्यकमों को नियोजन की संज्ञा दी जाती है। जिसका लक्ष्य ग्रामीण तक विकास के लाभों को पहुँचाया जा सके। ग्रामीण विकास की जटिल प्रकिया में ग्रामीण विकास के कार्यकम एक संख्या के रूप में कार्यरत होते है। अपने नीतियों एवं कार्यकमों के माध्यम से ग्रामीण विकास की योंजना तैयार करते है। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराकर आर्थिक विकास के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र को स्वरोजगार परक बनाने में सरकार की नीतियॉ महत्वपूर्ण साबित होती हैं। भारत सरकार के द्वारा राज्य सरकारें उनकी नीतियों ग्रामीण विकास हेतु नवीन योजनाओं को जनहित में उपलब्ध कराकर मूलभूत सुविधाओं, रोजगार सृजन, सामाजिक सुरक्षा, स्वच्छता पेयजल उपलब्धता, स्वास्थ्य , शिक्षा, कृषि, मनोरंजन, बाजार, परिवहन के साधन आदि के माध्यम से ग्रामीण विकास हेतु भारत सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं को लागू किया गया है, जो निम्न हैं–

1. सामुदायिक विकास कार्यकम –1952
2. गहन कृषि कार्यकम–1964
3. सूखाग्रस्त क्षेत्र विकास कार्यकम (DADP) –1970
4. लघु कृषक विकास कार्यकम (SFD) –1969
5. सीमांत कृषक श्रमिक कार्यकम (MFALA)–1971
6. न्यूनतम आवश्यकता कार्यकम (MNP)– 1973
7. समादेश क्षेत्र विकास कार्यकम (CADP)–1974–75
8. समन्वित ग्रामीण विकास कार्यकम (IRDP)
9. राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा –1979
10. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यकम NREP
11. स्वरोजगार हेतु ग्रामीण नवयुवकों का प्रशिक्षण TRYSEM
12. ग्रामीण पेयजल योजना–1986
13. इण्दिरा गॉधी आवास–1989
14. जवाहर रोजगार योजना–1989
15. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना–2015
16. किसान बीमा योजना–2015

17. प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना–2015
18. राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना 2005
19. प्रधानमंत्री सड़क, स्वास्थ्य, स्वरोजगार योजना
20. लोहिया ग्रामीण विकास योजना 2012
21. प्रधानमंत्री समग्र ग्रामीण योजना–2020

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

अध्ययन क्षेत्र शाहगंज तहसील के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के सैद्धान्तिक एवं स्थानिक संगठन के भौगोलिक कारकों के द्वारा ग्रामीण विकास हेतु योजनाओं एवं कार्यक्रमों के द्वारा समग्र ग्रामीण विकास की रूपरेखाा है। वर्तमान समय में ग्रामीण विकास को तीव्र गति से विकसित करने के लिये भारत सरकार की विभिन्न योजनायें वर्तमान समय में कार्यरत हैं जैसे कृषि यन्त्र वितरण, रासायनिक उर्वरक, लघु सिंचाई योजना, फसल बीमा योजना, आपदा निवारण बीमा, व्यावसायिक फसल, औषधि फसल, व्यापारिक कृषि, अधिक मूल्यवान बागवानी फसल, ग्राम विकास वृक्षारोपण योजना, सड़क योजना, विभिन्न ग्रामीण विकास योजना, वर्तमान समय मं कार्यरत हैं, जो ग्रामीण विकास की उन्नति में भारत सरकार राज्य की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। '' खुशहाल ग्रामीण, खुशहाल भारत योजना''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सिद्दकी आफताब अहमद 2002, ग्रामीण विकास में खादी और ग्रामोद्योग भूमिका, भारत में ग्रामीण विकास पत्रिका–वर्ष 47, पृ0 सं0–4
2. मणिनीतू ग्रामीण विकास कार्यकम कियान्वयन :2005
3. पाण्डेय सुधाकर ग्रामीण विकास कार्यकम कियान्वयन :2008
4. राकेश सिंह : ग्रामीण विकास का नियोजन –2013
5. राजेश कुमारः ग्रामीण विकास का नियोजन –2013
6. जनपद सांख्यिकीय पत्रिका 2018
7. ग्रामीण विकास पत्रिका नई दिल्ली –2015
8. शोध पत्र, लेख समाचार पत्र आदि
9. पत्रिका ग्रामीण विकास–2018